176 P
668
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1369/1014

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 668

668

152

* वन्देमातरम् *

राष्ट्रीय सभा सुसायटियों में गाने योग्य उत्तमोत्तम भजनों का संग्रह

891.43
R 184 R

राष्ट्रीय—गुलदस्ता

प्रकाशक—

ऐच० एल० गुप्ता

प्रथम बार २०००

सर्वाधिकार स्वरचित

मूल्य –)॥

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
10 DEC. 1930

नम्र निवेदन ।

प्रिय महानुभावो विदित हो कि मैं कोई कवि या शायर नहीं हूं और न संगीत की पिंगुल ही का ज्ञान रखता हूं तथापि हृदय के अन्दर कुछ ऐसी उत्कण्ठा उत्पन्न हुई कि आप लोगों की कुछ सेवा करूं और साथ २ कुछ देश की वर्तमान दशा को भी आप लोगों के सन्मुख उपस्थित करूं ताकि हमारे प्रिय मित्र भारत के सपूत तथा माता के सच्चे सेवक देश के वीर अपने प्रिय भारत की दशा को ध्यान में रखते हुये माता की लाज बचाने में कटिबद्ध हों और भविष्य का ध्यान रक्खें ।

आपका नम्र सेवक—
एच० ऐल० गुप्ता,
टूंडला (आगरा)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 668
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

प्रार्थना नं० १

ईश्वर हमारी विनती स्वीकार कीजियेगा।
जैसे थे वल में पूर्वज वल वैसा दीजियेगा॥
भारत की शान पर हम हों शोक से निछावर।
शक्ती यही दो स्वामी वल इतना दीजियेगा॥
तुम हो दया के सागर इतना तो दो दयामय।
भारत स्वतन्त्र होवे कृपया ये कीजियेगा॥
रोटी भी मिलें सूखी इसका न गम करेंगे।
पर देश को हमारे बलवान कीजियेगा॥
है और भी तमन्ना पर मुख्य एक यह है।
'हुएडी' की आत्मा में प्रकाश कीजियेगा।

भजन नं० २

दया तुम्हारी के हम भरोसे धरम पै अपने डटे रहेंगे।
विपत्ती लाखों पड़ें जो सर पर धरम की खातिर सभी सहेंगे॥
नेता हमारों ने प्राण त्यागे भरोसे तेरे धरम न छोड़ा।
वही हमारी है टेक भगवन जो कह रहे हैं सोई करेंगे॥
नहीं यह मरता है जीव हरगिज़ शरीर के संग जो रम रहा है।
धरम पै मरने के बाद हम भी हे ईश तेरे ही ढिग रहेंगे॥
हे इष्ट हर दम यह चाहता हूँ बनें उपासक सभी तुम्हारे।
रहेंगे फिर भी तो हम अगाड़ी तुम्हारी प्रभुता हिये धरेंगे॥

गजल नं० ३

जहाँ जाओ झण्डा तिरंगा लगा दो।
और माता को जल्दी स्वतन्त्र बना दो॥
गुलामों से डरना नहीं काम अपना।
जहां जो मिले उसको यही सुना दो॥
अमन की सभाओं मे अब लात मारो।
स्वतन्त्रता की वेदी पै गरदन चढ़ा दो॥
यह कज्ञा ज़ालिम गवर्नमेंट झण्डा
इसे जल्द अपने वतन से उठा दो॥
यह सरकार वो है जो चोरों से मिलती।
और हम से कहे माल अपना बचा लो॥
न सुनने के काबिल दगाबाज़ बातें।
हां जल्दी से तुम बोरी बिस्तर बधा दो॥
अमन की सभा में नहीं चैन पाओ।
अमन तो गया अब भरम भी मिटा दो॥
जो मानोगे 'झुण्डी' का कहना तो अच्छा।
समझ सोच लो मन्त्र देशी का धारो॥

गजल नं० ४

यह तमन्ना है कि अरमान न जाने पाये।
जान जाये मगर यह आन न जाने पाये॥

यही हो देश यही ध्यान यही हो रुतवा ॥
आखिरी वक्त भी यह मान न जाने पाये ॥
खाक़ भी समझें हमें तो भी उड़ के सर पहुँचें ।
खाक़सारों की भी यह शान न जाने पाये ।
दर्द हो सर में तो सर देश पर निछावर हो ॥
पर गुलामी में नहीं पांव भी जाने पावे ।
मर मिटो क़ौम पर हुन्डी को है अभिमान यही ॥
देश की कौम की पर शान न जाने पावे ॥

भजन नं० ५

खद्दर फिर माल विलायत से लौटा भारत को लायेगा ।
खद्दर ही सुख के दिन हमको फिर दोबारा दिखलायेगा ॥
खद्दर के मुकाविल मखमल भी मैनचस्टर को भग जावेगी ।
खद्दर ही खासे लट्ठे और मखमल के मान घटावेगा ॥
खद्दर ख़ाक़ीन बना देगा जो खद्दर को ठुकरावेगा ।
खद्दर उसका घर भर देगा जो खद्दर को अपनावेगा ॥
खद्दर 'गुप्ता' तुम भी पहनो खद्दर से खयाल दुरुस्त रहे ।
खद्दर देखना स्वराज्य हमें एक रोज अवश्य दिलाएगा ॥

अंग्रेजों की नाक में दम राष्ट्रीय आसावरी नं० ६

आई भारत में फिर से बहारी ।
जेल भरने लगी आज सारी ।

वाह माता के तुम नौनिहालो।
जो गुलामी में अब लात मारी ॥आई०॥
बांध लो तुम कमर प्यारे मित्रो।
कर दो रण क्षेत्र की अब तैयारी ॥आई०॥
अब पटेलों में है भारी हलचल।
पार्लियामेण्ट हो गई दुखारी ॥आई०॥
वाह लंगोटी के बाबा हमारे।
कैसी तूने यह हिम्मत बिचारी ॥आई०॥
हैं हैं देखो अरे यह हुआ क्या।
नाक में दम है इरविन के भारी ॥आई०॥
कर मदद ओ मशी ओ खुदारा।
ऐसे रोवे विलायत है सारी ॥आई०॥
अब बजाने फतह डंका यारो।
माता बहनों ने टोली सम्हारी ॥आई०॥
अब न मानेंगे हम तो किसी की।
यही 'हुण्डी' ने मन में विचारी ॥आई०॥

भजन नं० ७

भारत में अग्नी धधक उठी अब नहीं रुकाए रुक सकती।
मानेंगे हरगिज वीर नहीं चाहे पुलिस करे कितनी सख्ती॥
हम भारत के लाले पाले भारत का नस २ में खूं है।

भारत के ऊपर खेलेंगे भारत की शान न टल सकती ॥
हम भारत देश दुलारे हैं परतन्त्र नहीं रहना चाहें ।
इस शासन राज प्रणाली के है सर में भरी हुई खफ्ती ॥
है यही लालसा डुण्डी की भारत पर हो जीवन निसार ।
चूढ़े भारत की सेवा कर सच्चे दिल से कर ले भग्ती ॥

गजल नं० ८

लाजपति ने लाज रक्खी हिन्द की और कौम की ।
हिन्द के हित लाजपत ने जान अपनी होम दी ॥
चार लाठी के सहे हरगिज़ कदम टाला नहीं ।
चाहते थे सिर्फ वो आज़ादी अपनी कौम की ॥
हांक से उस वीर की से कांपता तिहुँ लोक था ।
जान दे कर वो गया पर शान रख दी कौम की ॥
आज 'गुप्ता' वीर ऐसे को करो तुम धन्यवाद ।
लाज अब जनता रखेगी अपनी प्यारी कौम की

बहर नं० ९

आई भारत में फिर से बहार है हां ।
रोवै इङ्गलैंड अब बार बार है हां ॥
काम चर्खे व तकली ने क्या क्या किये ।

खोल कर सब मिलों ने दिवाले दिये ॥
बहती आंखों से आंसू की धारि है हाँ ॥आई०॥
अब तो पहनेंगे खद्दर व गाढ़ा गजी।
नहीं मानेंगे अब हम किसी की अजी ॥
जोकि बोडी पर देती बहार है हां ॥आई०॥
शान भारत की ऐसी रहेगी सदा।
मेंनचेस्टर को भेजें बना के गधा॥
देता हाथों का कर्घा बहार है ॥ हां आई० ॥
आज भारत के वीरो प्रतिज्ञा करो।
जान देकर के भारत की रक्षा करो॥
कहना 'हुएडी' का यह बार बार है, हां ॥आई० ॥

गजल नं० १०

तुझे बाबा गाँधी लंगोटी मुबारिक।
मिलै राज तब ताज पोशी मुबारिक॥
तैने वीर योधा दिया मन्त्र ऐसा।
जो भूखों को दो टूक रोटी मुबारिक॥
नहीं रंज दायक तेरा जेल जाना।
बना रह बशर दिल से गाँधी मुबारिक॥
हो हुशियार ज़ालिम गवर्नमेएट तू भी।
गई तू हमारी हो वारी मुबारिक॥

लो सुन कान खोलो गुलामी के कौश्रो।
अब उद्यत हुई हंस टोली मुबारिक ॥
तुम्हें मुंह की खानी पड़ेगी गुलामो।
कहें 'हुन्डी' बाबा लंगोटी मुबारिक ॥

गजल नं० ११

बाग़े वतन में फूल हजारा है गांधी।
हम बुलबुलों को जान से प्यारा है गांधी ॥
खुशबू से जिसकी मंहक रहा है चमने हिन्द।
आरामे दिल है और दिलारा है गांधी ॥
हो होशियार जालिमो जल्लाद सम्हल जाओ।
अब कंसे वक्त कृष्ण दुलारा है गांधी ॥
परवाह नहीं कि जेल में शेरे बबर गया।
हर दिल को केशरी बना गया है गांधी।
समझे न कोई उसको हमारे दिलों से दूर।
अहले वतन की आँख का तारा है गांधी ॥
हम होंगे और होगा स्वराज एक दिन जरूर।
बल आत्मक की तेग दुधारा है गान्धी ॥
माता की लाजपति का रखैया था लाजपत।
भारत का खम्भ रूप सहारा है गान्धी ॥
तुलसी का यह प्रसाद स्वीकार हो अवस।
है कर में फूल पत्र की धारा है गान्धी ॥

भजन नं० १२

चर्खा अब मान घटावेगा गबह्रन त्रिफन और मतमत के
चर्खा स्वराज्य दिलायेगा हां रहें वीर पक्के धुनके ॥
चर्खा ने जो कुछ काम किया है रोशन सभी ज़माने को ॥
आया नुकसान करोड़ों का सब रोते मिल मालिक मिलके
चर्खा तलवार दुधारी है, चर्खा भारत का रक्षक है।
चर्खा से नेह लगाओ तुम सर भी जावे चाहे कटके ॥
'हुन्डी' ने भी पहिना खद्दर कर तर्क लिबास गुलामीका
भारत वीरो केसरी बनो, क्यों पड़े हो अन्दर दलदलके ॥

भजन नं० १३

श्री १०८ ऋषि दयानन्दजी सरस्वती की उपकारिता में

सोते से हम को जगा दिया ऋषी दयानन्द ने।
ग़फलत से हमको जगा दिया ऋषी दयानन्द ने ॥
शुभ कर्म फैलता जाता जो सबके मन को भाता।
सब दिल का भरम मिटा दिया, ऋषी दयानन्द ने
सब भारत के नर नारी सोते थे पैर पसारी।
दोऊ कन्धे पकड़ जगा दिया ऋषी दयानन्द ने ॥
यहां अनाथ बच्चे सारे मरते थे भूख के मारे।
हमें रक्षक उनका बना दिया ऋषी दयानन्द ने ॥

लाखों ही हमारे भाई बने हिन्दू मूर्ख अनारी।
उन्हें आर्या फिर से बना दिया ऋषी दयानन्द ने॥
अब गुरुकुल हो गये जारी, जहां पढ़ते हैं ब्रह्मचारी।
वेदों का पाठ पढ़ा दिया ऋषी दयानन्द ने॥
की मूर्ति पूजा खण्डन और सत्य धर्म का मण्डन।
पाखण्ड को जड़ से मिटा दिया ऋषी दयानन्द ने॥
है धन्यवाद ऋषी तुमको, दिया सत्य ज्ञान प्रभु हमको।
वेदों का ज्ञान बता दिया ऋषी दयानन्द ने॥
कवि आदिराम ज्ञानी की सुनिये मित्रो वानी।
शुभ नया छन्द कथ गादिया ऋषी दयानन्द ने॥

भजन नं० १३

हमें लाजपत की बदौलत मुबारिक,
बड़ा काम जोरों से देना मुबारिक॥
मरे लाठी खाकर बतन पर जो प्यारे,
तुम्हारे लिये होवे सुरपुर मुबारिक॥
सदा के लिये आप सुरपुर सिधारे,
दिया मन्त्र शिष्यों को अपने मुबारिक॥
कहें छुन्डी हो काम नेता का दूना,
और जनता को हो प्यारा भारत मुबारिक॥

गजल नं० १५ ॥

आनन्द दया का हमें स्वामी बता गया ।
वेदों के सत्य ज्ञान का हामी बना गया ॥
होकर विमुख पड़े थे हम सत राह भुलाकर ।
दे ग्यान चार वेद का रस्ता बता गया ॥
बुद्धी हुई विपरीत न ईश्वर का ज्ञान था ।
जड़ की उपासना छुटा, ईश्वर पुजा गया ॥
आती है सदा कान में उस पूज्य ऋषी की ।
कर दो प्रचार देश में जो मैं बता गया ॥
दो त्याग मित्रो दिल से आपस की खिलाफत ।
सींचो उसी सजर को जो स्वामी लगा गया ॥
दिखलादो उन्नती कर सारे जहान को अब ।
बतलादो ऋषी करतब जो कर दिखागया
है प्रार्थना हुन्डी की जीना नहीं मरना है ।
करके जो कौल को कदम पीछे हटा गया ॥

भजन नं० १६

ऋषीवर तुम्हारा हो आना मुबारिक ।
हमें वेद आ गया सुनना मुबारिक ।
रहे घोर निन्द्रा में सदियों से सोते ॥
हमें ख्वाब से आ जगाना मुबारिक ॥

तेरे ऋण से स्वामी उऋण हम न होंगे।
हमें सत्य मार्ग बताना मुबारिक ॥
तुम्हारी दया के हैं आभारी ऋषिवर।
हो आनन्द सब को मनाना मुबारिक ॥
हुआ ज्ञान ऋषिवर तुम्हारी कृपा से।
हमें वेद अमृत पिलाना मुबारिक ॥
अगर होता रहबर हमारा जहां में।
तो था पूर्व सबको जमाना मुबारिक ॥
तू दे देश सेवा में जीवन को हुण्डी ॥
तुझे हो ऋषी का तराना मुबारिक ॥

गाना थियेट्रीकिल नं० १७

नाथ कृपा कर वेग निहारो।
भारत के दुख को अब टारो ॥ नाथ कृपा० ॥
तुम हो एक दयामय प्यारे।
भारत के तुमही रखवारे ॥
भारत संकट शीघ्र उबारो ॥ नाथ कृपा० ॥
लन्दन से ऊंचे बन जावें।
मेंनचस्टर को मार भगावें ॥
दो यह शक्ती देश सुधारो ॥ नाथ कृपा० ॥
देश धर्म की उन्नति होवै।

भारत माता सुखमय सोवै ॥
निज पुत्रों का यह प्रण धारो ॥ नाथ कृपा० ॥
पूज्य हमारा भारत प्यारा ।
होय स्वतन्त्र मिटै तम सारा ॥
करुणा मय करुणा यह धारो ॥ नाथ कृपा० ॥
पूर्ण भरोसा है तब स्वामी ।
करहु कृपा तुम अन्तर्यामी ॥
सेवक हुण्डी तब हो भारी ॥ नाथ कृपा० ॥

आरती नं० १८

ओ३म् जय जगदीश हरे प्रभु जय जगदीश हरे ॥
भगत जनन के संकट छण में दूर करे ॥ ओ३म्० ॥
जो ध्यावै फल पावै दुख विन सैयमन का ।
सुख सम्पति घर आवै कष्ट मिटै तनका ॥ ओ३म्० ॥
मातु पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसको ।
तुम बिन और न कोई आस करूं जिसको ॥ ओ३म्० ॥
तुम पूरण परमात्म तुम अन्तरयामी ।
परब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ॥ ओ३म्० ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन करता ॥
मैं अबोध अज्ञानी कृपा करो भरता ॥ ओ३म्० ॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपती ।

किस विधि मिलूं दयामय तुमसे मैं कुमती ॥ ओ३म् ॥
दीनबन्धु दुख हरता तुम रक्षक मेरे ।
करुणा हस्त बढ़ाओ शरण पड़ा तेरे ॥ ओ३म्० ॥
प्रभुजी की सुन्दर आरति जो कोई गावै ।
कहत वेद यह चारों वंछित फल पावै ॥ ओ३म्० ॥

बन्दना समाप्ति ।

दोहा—दीनबन्धु करुणा यतन, हरण रोग संसार ।
वन्दहु चरण सरोज तव, वारिज नयन अपार ॥
करहु कृपा अरु देहु मोहि, जगन्मातु पद प्रीत ।
देश प्रेम नित नव बढ़ै, कामादिक भट जीत ॥
जिमि रक्ष्यौ गजराज को, दीनबन्धु भगवान ।
तिमि रक्षो मोहि दीन को, दया धाम मतिमान् ॥

आपका विनीत——

एच० एल० गुप्ता बी० ।